शोधसार

प्रस्तुत शोध में मनुष्य जीवन की द्वन्द्वता का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मनुष्य एक के बाद एक द्वन्द्व में पड़ता है। इस शोध को लिखने का मुख्य उद्देश्य इन दोनों में चित्रित मनुष्य की द्वन्द्वता का मूल्यांकन करना है। इसमें मनुष्य की आकांक्षा को भी दिखाया गया है कि किस प्रकार मनुष्य को बहुत कुछ पाने की इच्छा होती है और वह इच्छा पूर्ण होने पर उसके मन में और कुछ पाने की इच्छा पुनः जागती है। इस प्रकार यहाँ यह दिखाया गया है कि मनुष्य की इच्छा एवं आकांक्षा कहीं तृप्त नहीं हो पाता है। इस तरह मनुष्य जीवन की इसी द्वन्द्वता के संघर्ष की एक सुन्दर गाथा है- महेश कटारे का हिंदी उपन्यास 'कामिनी काय कांतारे' तथा मनोज दास द्वारा रचित ओडिया उपन्यास 'अमृतफल'। इन दोनों उपन्यासों का मुख्य पात्र भर्तृहरि ही है । जिसके माध्यम से मनुष्य की विभिन्न प्रकार की द्वन्द्वता को दिखाया गया है। कि वह किस प्रकार हर स्थिति में द्वन्द्व में रहता है । वो स्वयं उज्जयिनी का राजा होते हुए भी हमेशा द्वन्द्व में डूबा रहता है तथा अपने जीवन को इसी द्वन्द्व में बिता देता है।

राजा भर्तृहरि को चंडमुनी एक अमृतफल देते हैं परन्तु उस अमृतफल को राजा खुद न खाकर प्रेम वश उसे रानी को दे देते है। वहीं रानी अपने पर किये उपकार वश उस फल को एक सैनिक को देती है फिर वो सैनिक भी प्रेम वश वह फल एक वैश्या को दे देता है। वो वैश्या अपने जीवन को नर्क सदृश मानती है इसलिए वह पुनः उस फल को राजा को देती है| इस प्रकार जब वैश्या से राजा वह फल पाता है तो वह द्वन्द में पड़ जाता है और रानी के ऊपर संदेह कर उसे बेवफा समझता है, क्योंकि उसने वह फल रानी को ही दिया था फिर ये वैश्या के पास कैसे पहुंचा। इस घटना से राजा इतना आहत होता है कि वह तथागृहकर देता है। इस कथा को दोनों ही उपन्यासों में अलग-अलग तरीके से व्यक्त किया गया है। 'अमृतफल' उपन्यास में राजा के शिकार के वक़्त बारा के खून से लटपट हुए अपने कपड़ों को राजा अपने एक मित्र के हाथ से रानी पिंगला को भेज देते हैं उनकी मनोदशा देखने के लिए। परन्तु ,जब राजा राजभवन आते हैं तो देखते हैं कि रानी की मृत्यु हो गयी है। इससे इन्हें सदमा पहुँचता है जिसके कारण वे गृहत्याग करके चले जाते हैं। तथागृहके बाद उनकी मुलाकात सिन्धुमती से होती है और वो उन्हें प्रेम करने लगते हैं। उससे विवाह कर उसे राजभवन लाते हैं, पुनः राजा इस संसार से उब जाता है तथा गृहत्याग करता है। ज्ञान की तलाश में आध्यात्मिकता की ओर जाता है।

इसे मनोज दास ने घड़ी के पेंडुलम से तुलना किया है जैसे वो किसी छोर में स्थिर नहीं रह पाता है तथा एक छोर से दूसरे छोर की ओर गति करता है। इसे आज के आधुनिक समय के साथ जोड़ा है। आज के समाज के मनुष्यों की भी यही दशा है। वो भी हर स्थिति में द्वन्द्व में रहता है।

'कामिनी काय कांतारे' उपन्यास में भी इसी कथा का पूर्ण रूप से ज़िक्र किया गया है। लेकिन यहाँ रानी की मृत्यु नहीं होती है यहाँ राजा रानी को बेवफा मानकर तथागृहकरता है तथा ज्ञान की खोज में निकलता है। गृहत्याग कर जब वह जाता है तो उसका साँची से मुलाकात होती है तथा वो उसे प्रेम करने लगता है| इन दोनों का मिलन भी होता है। पुनः राजा संसार को माया सोचकर आगे बढ़ जाता है। यहाँ भर्तृहरि की तरह रानी भी अपने जीवन से संतुष्ट नहीं है वो भी आम स्त्रियों के जीवन को अपने जीवन से उत्तम मानती है। आम स्त्रियाँ भी खुद के जीवन से ज्यादा रानी के जीवन को उत्तम मानती है। इसी प्रकार स्त्रियों के जीवन में भी तृप्ति के अभाव को दिखाया है।

देखा जाय तो आज के मनुष्यों की भी यही स्थिति भी है। जिस प्रकार राजा ज्ञान के लिए हर जगह भटकता है। मनुष्य भी तृप्ति के लिए इधर-उधर भटकता है पर उसे तृप्ति नहीं मिलती है। इसमें इन्द्रियों की भी बात कही गयी है कि किस प्रकार इन्द्रियों को वश में करने से मनुष्य को फायदा मिलता है। यहाँ विभिन्न प्रकार के धर्म यथा जैन, बुद्ध आदि के बारे में दिखाया गया है | इसकी चर्चा कुछ इस प्रकार की गई है कि जैन धर्म में मनुष्य को बहुत कष्ट होता है। क्योंकि इस धर्म के नियम बहुत कठोर है। उसी प्रकार बुद्ध धर्म को भी राजा ने पूर्ण रूप से ठीक नहीं माना है क्योंकि इसमें मनुष्य को वैरागी होना पड़ता है। जिससे वह अपना परिवार नहीं बना सकता है। इस कारण बुद्ध धर्म भी समाज में टिक नहीं पाया क्योंकि समाज में कुछ ही ऐसे मनुष्य होंगे जो कि वैरागी होना चाहते होगें। इनमें पक्षियों की आवृति को भी दिखाया गया है। साथ ही कामिनी काय कांतारे उपन्यास में जीव-जंतुओं की आवाज़ जैसे चर्-चर्, टर्-टर्र आदि आवाजों का वर्णन किया गया है। जिसके द्वारा प्रकृति का भी सुन्दर चित्र खींचा गया है। मनोज दास ने भी प्रकृति की झाँकी अपने 'अमृतफल' उपन्यास में प्रस्तुत किया है।

उपन्यासों में श्मसान का भी चित्र प्रस्तुत किया गया है। श्मसान में किस प्रकार तांत्रिक शव को नीचे रखकर तंत्र साधना करता हैं इसे दिखाया गया है।उसके साथ गुरु की महिमा, पांथशाला,

मधुशाला,दासमंडी,नाटक,काव्य पंक्ति, पत्राचार,छद्मवेशी,स्त्री स्वतंत्रता,मिथक आदि का भी वर्णन किया गया है। इसमें यह दिखाया गया है कि किस प्रकार राजा ज्ञान प्राप्ति के लिए इधर-उधर घूमता है। लेकिन उसे कहीं भी तृप्ति नहीं मिलती। गृह -त्याग के बाद राजा जब वृकवन में वृकसेना से बचने के लिए एक पेड़ के ऊपर चढ़ जाता है और पूरी रात उसी पेड़ के ऊपर अपने बीते हुए दिनों को याद करता है तथा वहाँ भी वह उज्जयिनी जाने की बात सोचता है। लेकिन वो यह तय नहीं कर पाता है कि वो क्या करे?

उपन्यासों में शिल्पपति अमरनाथ के बारे में दिखाया गया है। जो एक बड़े व्यवसायी हैं। वे अपनी फ़ैक्टरी में सलाइन की बोतलें प्रस्तुत करते थे तथा बाज़ार में बेचते थे। अमरनाथ का स्वास्थ्य ख़राब होने के कारण उनका बेटा विदेश से लौटता है। तथा उस समय फ़ैक्टरी में सलाइन की कुछ बोतलें ख़राब हो जाती हैं । लेकिन अमरनाथ क्षति के डर से सभी ख़राब सलाइन की बोतलों को बाज़ार में बेच देते हैं। जब अमरनाथ के बेटे की सेहत ख़राब होती है, तो दुर्भाग्यवश उसी फ़ैक्टरी का एक ख़राब सलाइन बोतल उसे चढ़ाया जाता है जिसके कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार अमरनाथ अपने लालच के कारण अपने बेटे को खो देता है। इसके माध्यम से आज के लालची व्यापारियों को दिखाया गया है जो अपने लाभ के लिए किसी की भी जान को बाज़ी लगा देते हैं। इन दोनों उपन्यास ‘कामिनी काय कांतारे’ और ‘अमृतफल’ में आज के आधुनिक जीवन की द्वन्द्वता और समस्या को को ही दर्शाया गया है।